ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-09, No.04, September: 2023

# जनजातियों के आर्थिक स्तर पर लघुवनोपज की भूमिका का अध्ययन (छत्तीसगढ़ के जशपुर जिला के विशेष संदर्भ में)

***मौसमी पन्ना** शोध छात्रा अध्ययनशाला, पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,रायपुर (छ.ग)
****डॉ.अर्चना सेठी** वरिष्ठ सहायक प्राध्यापक,अर्थशास्त्र अध्ययनशाला,पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,रायपुर (छ.ग)

## सारांश
भारत में जहाँ लघु वनोपज आधारित लघु उपक्रम 20–30 प्रतिशत ग्रामीण श्रम शक्ति को 50 प्रतिशत आय प्रदान करते हैं, वहीं वानिकी क्षेत्र में केवल लघु वनोपज ही 55 प्रतिशत रोजगार प्रदान करने में सक्षम है। अनार्थिक जोत, सिंचाई साधनों की कमी तथा न्यून उत्पादकता के कारण जनजातीय क्षेत्रों की मानसून आधारित कृषि, भरपूर उत्पादन लेने के आदर्श से प्रेरित होकर जीवन निर्वहन योग्य फसल लेने के यथार्थ से बंधी है। फलतः जनजातियों द्वारा कृषि उत्पाद का न्यूनतम मात्रा में विपणन किया जाता है। लघु वनोपज के विपणन प्रणाली को 2 भागों में बाँटा जा सकता है। 1. राष्ट्रीयकृत लघु वनोपज और 2. अराष्ट्रीयकृत लघु वनोपज। राष्ट्रीयकृत लघु वनोपज के विपणन पर शासन का पूर्ण अधिकार होता है। अराष्ट्रीयकृत लघु वनोपज का सर्वाधिक विपणन 30.56 प्रतिशत साप्ताहिक बाजार एवं सहकारी विपणन केंद्र में होता है। सबसे कम 3.27 प्रतिशत लघु वनोपज का विपणन ब्यापारी के पास होता है। सर्वाधिक 38.69 प्रतिशत निदर्श जनजाति परिवार की वनोपज से 5000 से 10000 रु तक वार्षिक आमदनी है। 28.57 प्रतिशत परिवार 1000 से 15000 रु. प्राप्त करते हैं। 1.49 प्रतिशत जनजाति परिवार 5000रु. तक आय प्राप्त करते हैं।

## शब्द कूंजी :
लघु वनोपज, विपणन, राष्ट्रीयकृत, अर्थव्यवस्था।

## प्रस्तावना
जनजातीय अर्थव्यवस्था वन एवं पर्यावरण से गहराई से जुड़ी है। जनजातियों की समस्त सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में वन एवं वनोपजों की महत्वपूर्ण भूमिका है। वन उनके लिए प्राकृतिक आवासगृह के समान है, जहां से उन्हें खाद्य पदार्थ, रोजगार, आर्थिक समृद्धि एवं उनकी संस्कृति के विकास को बल मिलता है। वस्तुतः वन जनजातियों के पोषक रहे हैं, जिनसे उन्हें प्रत्यक्ष लाभ जैसे–ईंधन, काष्ठ, चारा, फल–फूल, छाल, रेशे एवं अनेक वाणिज्यिक महत्व के लघुवनोपज आदि प्राप्त होते हैं। जनजातियों की सम्पूर्ण जीवन पद्धति में लघुवनोपजों की महत्वपूर्ण भूमिका है ना कि केवल जीवन निर्वहन हेतु वरन् अत्यधिक रोजगार, आय एवं विदेशी विनिमय की प्राप्ति हेतु भी लघु वनोपज जहां 50 प्रतिशत से भी अधिक आय प्रदान करते हैं, वहीं रोजगार का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत भी है। गरीब ग्रामीण जनसंख्या अतिरिक्त आय एवं रोजगार हेतु लघु वनोपजों पर अत्यधिक निर्भर हैं। कुछ जनजातीय समुदायों में वनोपज से प्राप्त आय का प्रतिश कृषि आय से भी अधिक है।

## अध्ययन क्षेत्र :–
जशपुर जिला छत्तीसगढ़ के 27 जिलों में से एक जिला है, इसका मुख्यालय जशपुर नगर में है। इस जिले की उत्तर–दक्षिण लम्बाई लगभग 150 किमी. है और इसकी पूर्व–पश्चिम चौड़ाई लगभग 85 किमी. है। इसका कुल क्षेत्रफल 6205 वर्ग किमी. है। यह $22^0$ 17′ और $23^0$ 15′ उत्तरी अक्षांश और $83^0$ 30′ और $84^0$ 24′ पूर्व रेखांश के बीच है।

## अध्ययन का उद्देश्य :–
अध्ययन का उद्देश्य निम्नलिखित है –
1- जशपुर जिला में लघुवनोपज का संग्रहण एवं उपभोग का अध्ययन करना।
2- जशपुर जिला में लघुवनोपज के विपणन पद्धति का अध्ययन करना।
3- जशपुर जिला में लघुवनोपज के माध्यम से जनजातियों की रोजगार, आय पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
4- अध्ययन पश्चात आवश्यक सुझाव प्रस्तुत करना।


Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-09, No.04, September: 2023

**6. अध्ययन की परिकल्पना :–**

1- **शून्य परिकल्पना ($H_0$)–** जनजातियों की रोजगार एवं आय पर लघुवनोपज से कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ा है।

**वैकल्पिक परिकल्पना ($H_1$)–** जनजातियों की रोजगार एवं आय पर लघुवनोपज से सार्थक प्रभाव पड़ा है।

2- **शून्य परिकल्पना ($H_0$)**– लघुवनोपज आय से जनजातियों की संतुष्टि में कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ा है।

**वैकल्पिक परिकल्पना ($H_1$)–** लघुवनोपज आय से जनजातियों की संतुष्टि में सार्थक प्रभाव पड़ा है।

**7- शोध प्रविधि :–**

**समंकों का संकलन**

अध्ययन हेतु जशपुर जिला के चार विकासखण्ड फरसाबहार, कुनकुरी, दुलदुला एवं बगीचा को लिया जायेगा एवं चारों विकासखण्ड से 2–2 ग्राम का दैव निदर्शन के माध्यम से चयन किया गया। न्यादर्श आकार के निर्धारण के लिए स्लोविन विधि का प्रयोग किया गया।

**स्लोविन विधि :–**

अध्ययन हेतु जब कोई नमूना बहुत बड़े जनसंख्या से लिया जाता है तब त्रुटि सहिष्णुता को ध्यान में रखने के लिए इस सूत्र का प्रयोग किया जाता है। जिससे हमें यह निर्णय लेने में आसानी होती है, तथा उपयुक्त अध्ययन की संख्या में से कितने का अध्ययन कम से कम त्रुटिपूर्ण किया जा सके, जिससे लिया गया नमूना सम्पूर्ण समग्र का प्रतिनिधित्व कर सके।

**स्लोविन विधि का सूत्र** $n = N/1+N_e^2$

जहाँ

n = नमूनों की संख्या जो कि समग्र का प्रतिनिधित्व करता है।

N = कुल संख्या

e = त्रुटि सहिष्णुता (0.05)

n = 336

**तालिका : 1 निदर्श पद्धति**

| क्र. | चयनित विकासखण्ड का नाम | चयनित ग्राम पंचायत | जनजातियों की कुल जनसंख्या | कुल जनजाति परिवार संख्या | प्रतिशत | कुल न्यादर्श परिवार की संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | फरसाबहार | माटी पहाड़ छर्रा | 1045 | 297 | 13.90 | 46 |
| | | हाथीबेड़ | 450 | 70 | 3.27 | 11 |
| 2 | कुनकुरी | खुटगाँव | 608 | 220 | 10.29 | 35 |
| | | चटकपुर | 591 | 190 | 8.87 | 30 |
| 3 | दुलदुला | कस्तुरा | 731 | 228 | 10.8 | 36 |
| | | पतराटोली | 870 | 260 | 12.17 | 41 |
| 4 | बगीचा | कलिया | 1627 | 421 | 19.7 | 66 |
| | | बछराँव | 1611 | 450 | 21 | 71 |
| **योग** | | | 7533 | 2136 | 100 | 336 |

**समंकों का विश्लेषण :** लघुवनोपज से जनजातियों की संतुष्टि में प्रभाव का अध्ययन करने के लिए काई–वर्ग परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

काई–वर्ग परीक्षण का सूत्र –


Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-09, No.04, September: 2023

$$x^2 = \left[\Sigma \frac{(fo - fe)^2}{fe}\right]$$

जहाँ –

$x^2$ = काई–वर्ग परीक्षण

$fo$ = वास्तविक आवृत्ति

$fe$ = प्रत्याशित आवृत्ति

**वनोपज आय को प्रभावित करने वाले कारक :**

आय को प्रभावित करने वाले कारकों को ज्ञात करने के लिए बहुगुणी प्रतीपगमन गुणांक का प्रयोग करेंगे। सूत्र निम्नलिखित हैं –

$$\boldsymbol{Yc = a + b_1x_1 + b_2x_2 + b_3x_3 + b_4x_4 + b_5x_5 + b_6x_6 + b_7x_7}$$

Yc = आश्रित चर का संगणित मूल्य

$x_1$, $x_2$ , $x_3$ $x_4$, $x_5$, $x_6$ .$x_7$ = स्वतंत्र चर

$b_1$,$b_2$,$b_3$,$b_4$,$b_5$,$b_6$ = प्रतिपगमन गुणांक

$a_{1.23}$ = स्थिरांक

$x_1$ = जनजातियों की आय

$x_2$ = जनजातियों का कार्य

$x_3$ = जनजातियों की शिक्षा

$x_4$ = जनजातियों की कार्य अवधि

$x_5$ = वनोपज की किस्म

$x_6$ = परिवार का आकार

**शोध साहित्य का अध्ययन**

Marothia,D.K., Gauraha, A.k. (1996)[1] – इन्होंने अपने अध्ययन "Co-operative Management of Tendu Leaves: A Micro Analysis" में बताया कि तेंदूपत्ता एक व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण नवीकरणीय प्राकृतिक संसाधन है। तेंदूपत्ता का उपयोग तम्बाकू के आवरण के लिये, बीड़ी बनाने के लिए किया जाता है। Shukla,Niket & Pandey,Sanjay (2015)[6]– इन्होंने अपने षोध मेंकहा कि छत्तीसगढ़ में वन और वन उत्पादों से सम्बन्धित नीतियों का व्यापक रूप से विष्लेषण कर रहा है। यहाँ नवोन्मेषी लकड़ी के उत्पाद मूल्यवर्धित लकड़ी के उत्पाद और आवास का विष्लेषण किया जा रहा है। Hossain,MD Emran &Sarma, Sabuj Manohar (2015)[9]–इन्होंने अपने लेख में बताया कि साल बीज की रासायनिक संरचना एवं पोषक मूल्य का पता लगाने के लिए अध्ययन किया गया था आदिवासी बहुल क्षेत्रों में साल बीज को एकत्रित कर उसे सुखाकर तथा उसका बीज निकाला जाता है और इसे बाजारों में भी बिक्री की जाती है । Tripathi, Prakash (2016)[12]–इन्होंने बताया कि भारत मे लगभग 10.4 मिलियन जनजातियों की भूमि है जो इसकी कुल आबादी का 8.6 प्रतिशत है और इसके भौगोलिक क्षेत्र के 15 प्रतिशत में फैला हुआ है। उन्होंने यह भी कहा कि जनजातियों का जंगल से बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है और उनका जीवन–यापन भी वन संसाधनों के ही अनुरूप है। Tah,Jagatpati, Mukharjee &Ashok Kumar(2018)[23]&इन्होंने अपना अध्ययन में साल वृक्ष की महत्व को बताया है। साल वृक्ष एक मूल्यवान इमारती लकड़ी है जिसका राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय देषों में इसकी उपयोगी है। Prasad, Sunil (2020)[28]– इन्होंने अपने अध्ययन में बताया कि लधु वनोपज लाखों वनवासियों की आजीविका का स्रोत रहे हैं। विकासशील देशों में चिरौंजी के कई प्रजाति हैं, भारत के विभिन्न हिस्सों में ग्रामीण आदिवासियों के लिए व्यावसायिक रूप से बहुत ही उपयोगी है। Acharya,Rajib Lochn (2020)[30]– इन्होंने अपने अध्ययन में बताया कि क्योंझर जिले में वन संसाधन और आदिवासी अर्थव्यवस्था का विकास पर अध्ययन किया गया है। वहाँ के आदिवासी अर्थव्यवस्था काफी हद तक वन संसाधनों से प्रभावित हैं ।

**लघुवनोपज का सामान्य परिचय**– जशपुर जिला के चयनित न्यादर्श विकासखण्डों में पाये जाने वाले प्रमुख लघुवनोपज निम्नलिखित हैं –


Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-09, No.04, September: 2023

**तालिका 2 प्रमुख लघुवनोपज**

| क्र. | वनोपज के हिन्दी नाम | स्थानीय नाम |
|---|---|---|
| 1 | महुआ फूल | महुआ |
| 2 | महुआ फल | डोरी |
| 3 | तेन्दूपत्ता | तेन्दूपत्ता |
| 4 | साल बीज | सरई बीज |
| 5 | कोसा | टसर |
| 6 | आम गुठली | आम गुठली |
| 7 | चिरौंजी | चार |
| 8 | चिरौंजी गुठली | चार गुठली |
| 9 | कुसुम | कुसुम |
| 10 | इमली | इमली |
| 11 | बेर | बेर |
| 12 | चरौटा | चेरोटा |
| 13 | नीम | नीम फल |
| 14 | आँवला | औंरा |
| 15 | हर्रा | हर्रा |
| 16 | बहेड़ा | बेहरा |
| 17 | बेल | बेल |
| 18 | लाख | लाख |
| 19 | माहुल पत्ता | महलंग,सिहैर |
| 20 | करंज | करंज |
| 21 | वन तुलसी बीज | बन तुलसी |
| 22 | शहद | शहद |
| 23 | इंद्रजौ | कोरिया |
| 24 | पलास फूल सूखा | फरसा फूल |
| 25 | कांटा झाड़ू | कांटा झाड़ू |
| 26 | भूईनीम सूखा | भूईनीम सूखा |
| 27 | तेन्दू फल | केन्दू |
| 28 | भेलवाँ | भेलवाँ |
| 29 | धावड़ा गोंद | धौंरा |
| 30 | फूल बहरी | फूल बहरी |

**लघु वनोपज का विपणन :**

जनजातीय क्षेत्रों में लघु वनोपज का विपणन अधिकतर हाट बाजार में होता है। ग्रामीण ब्यापारी विपणन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। इन्हें बिचौलिये, कोचिया या दलाल आदि कहा जाता है। जनजातीय क्षेत्रों में वनोपज की माप हेतु अलग अलग प्रणाली प्रचलित है। लघु वनोपज के विपणन प्रणाली को 2 भागों में बाँटा जा सकता है। 1.राष्ट्रीयकृत लघु वनोपज 2. अराष्ट्रीयकृत लघु वनोपज। राष्ट्रीयकृत लघु वनोपज के विपणन पर शासन का पूर्ण अधिकार होता है। राष्ट्रीयकृत लघु वनोपज जेसे तेंदूपत्ता, सालबीज ,हर्रा, गोंद, इमारती लकड़ी, बांस के विपणन पर शासन का पूर्ण नियंत्रण होता है। अराष्ट्रीयकृत लघु वनोपज पूर्ण रुप से निजी व्यापारियों एवं दलालों द्वारा संचालित होता है।

**तालिका : 3 अराष्ट्रीयकृत लघु वनोपज विपणन**

| क्र. | विपणन स्थान | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | व्यापारी | 11 | 3.27 |
| 2 | सप्ताहिक बाजार | 56 | 16.67 |


Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-09, No.04, September: 2023

| | | | |
|---|---|---|---|
| 3 | सहकारी विपणन केंद्र | 34 | 10.12 |
| 4 | व्यापारी एवं सप्ताहिक बाजार | 97 | 28.87 |
| 5 | सप्ताहिक बाजार एवं सहकारी विपणन केंद्र | 102 | 30.56 |
| 6 | व्यापारी एवं सहकारी विपणन केंद्र | 36 | 10.71 |
| 7 | व्यापारी, सप्ताहिक बाजार एवं सहकारी विपणन केंद्र | 336 | 100 |

स्रोत : व्यक्तिगत सर्वे से प्राप्त ।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि अराष्ट्रीयकृत लघु वनोपज का सर्वाधिक विपणन 30.56 प्रतिशत सप्ताहिक बाजार एवं सहकारी विपणन केंद्र में होता है। सबसे कम 3.27 प्रतिषत लघु वनोपज का विपणन व्यापारी के पास होता है।

**तालिका : 4 निदर्श जनजातियों की लघुवनोपज के अतिरिक्त अन्य व्यवसाय**

| क्र. | व्यवसाय | परिवार | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | कृषि | 145 | 43.15 |
| 2 | मजदूरी | 83 | 24.70 |
| 3 | कृषि एवं मजदूरी | 72 | 21.43 |
| 4 | नौकरी | 17 | 5.06 |
| 5 | किराना दुकान | 19 | 5.65 |
| योग | | 336 | 100 |

स्रोत : व्यक्तिगत सर्वे से प्राप्त ।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 43.15 प्रतिशत जनजाति परिवार वनोपज के अतिरिक्त कृषि कार्य करते हैं। सबसे कम 5.06 प्रतिशत जनजाति परिवार वनोपज के अतिरिक्त नौकरी करते हैं।

**तालिका : 5 जनजाति आय में लघुवनोपज से प्राप्त आय का योगदान**

| क्र. | लघुवनोपज से प्राप्त आय का योगदान | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | 20 प्रतिशत तक | 26 | 7.74 |
| 2 | 20 से 40 | 83 | 24.70 |
| 3 | 40 से 60 | 125 | 37.20 |
| 4 | 60 से 80 | 31 | 9.23 |
| 5 | 80 से 100 | 71 | 21.13 |
| योग | | 336 | 100 |

स्रोत : व्यक्तिगत सर्वे से प्राप्त ।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 37.20 जनजाति परिवारों की आय में लघुवनोपज का योगदान 40 से 60 प्रतिशत है। 21.13 प्रतिशत परिवार की आय में लघुवनोपज का योगदान 80 से 100 प्रतिशत तक है। जनजाति परिवारों के आय का प्रमुख स्रोत वनोपज है, लेकिन अशिक्षा, अज्ञानता के कारण वनोपज का उचित मूल्य उन्हें नहीं मिल पाता। यदि विपणन की उचित व्यवस्था की जाये तब जनजाति परिवार की आय को बढाया जा सकता है।

**तालिका : 6 जनजाति परिवारों की आय**

| क्र. | वार्षिक आय(रुपये) | परिवार की संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | 5000 तक | 05 | 1.49 |
| 2 | 5000 10000 | 130 | 38.69 |
| 3 | 10000 15000 | 96 | 28.57 |
| 4 | 15000 20000 | 82 | 24.41 |
| 5 | 20000 25000 | 17 | 5.06 |


Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-09, No.04, September: 2023

| | | | |
|---|---|---|---|
| 6 | 25000 से अधिक | 06 | 1.78 |
| योग | | 336 | 100 |

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 38.69 प्रतिषत निदर्श जनजाति परिवार की वनोपज से 5000 से 10000 रु. तक वार्षिक आमदनी है। 28.57 प्रतिशत परिवार 1000 से 15000 रु. प्राप्त करते हैं। 1.49 प्रतिशत जनजाति परिवार 5000 रु. तक आय प्राप्त करते हैं।

**तालिका : 7 लघुवनोपज से प्राप्त रोजगार दिवस**

| क्र. | रोजगार दिवस | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | 100 दिवस तक | 95 | 28.27 |
| 2 | 101 से 200 दिवस तक | 142 | 42.26 |
| 3 | 201 से 300 दिवस तक | 72 | 21.43 |
| 4 | 300 से अधिक दिवस | 27 | 8.04 |
| | योग | 336 | 100 |

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 42.26 प्रतिशत परिवार 101 से 200 दिवस तक लघुवनोपज से रोजगार प्राप्त करते हैं एवं सबसे कम 8.04 प्रतिषत परिवार 300 दिवस से अधिक दिवस लघुवनोपज से रोजगार प्राप्त करते हैं।

## आय एवं संतुष्टि अनुसार जनजातियों का वितरण

आय एक महत्वपूर्ण कारक है जो संतुष्टि को प्रभावित करता है। संतुष्ट इंसान अत्यधिक कुशलतापूर्वक कार्य करता है। जिससे उसकी आय में वृद्वि होती है।

**तालिका : 8 आय एवं संतुष्टि अनुसार जनजातियों का वितरण**

| क्र. | वार्षिक आय (रुपये) | संतुष्ट | | असंतुष्ट | | योग | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | संख्या | प्रतिशत | संख्या | प्रतिशत | संख्या | प्रतिशत |
| 1 | 5000 तक | 00 | 00 | 05 | 2.55 | 05 | 1.49 |
| 2 | 5000-10000 | 41 | 29.29 | 89 | 45.41 | 130 | 38.69 |
| 3 | 10000-15000 | 36 | 25.71 | 60 | 30.61 | 96 | 28.57 |
| 4 | 15000-20000 | 47 | 33.57 | 35 | 17.86 | 82 | 24.41 |
| 5 | 20000-25000 | 12 | 8.57 | 05 | 2.55 | 17 | 5.06 |
| 6 | 25000से अधिक | 04 | 2.86 | 02 | 1.02 | 06 | 1.78 |
| योग | | 140 (41.67) | 100 | 196 (58.33) | 100 | 336 | 100 |

सारणी मान 11.070

$x^* > x^2$, स्वतंत्र अंश 5, सार्थकता स्तर 0.05%

$x^*$= परिगणित मूल्य

$x^{2=}$ तालिका मूल्य

18.7>11.070

परिगणित मूल्य तालिका मूल्य से अधिक है अतः संतुष्टि पर वनोपजआय का प्रभाव पड रहा है। अतः द्वितीय शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई

## जनजातियों के आय को प्रभावित करने वाले कारक –

जनजातियों के आय को प्रभावित करने वाले अनेक कारक होता है। आय को प्रभावित करने वाले कारकों को ज्ञात करने के लिए बहुगुणी प्रतीपगमन गुणांक का प्रयोग किया है सूत्र निम्नलिखित है –

$$Yc = a + b_1x_1 + b_2x_2 + b_3x_3 + b_4x_4 + b_5x_5 + b_6x_6$$

Yc = आश्रित चर आय का संगणित मूल्य

$x_1, x_2, x_3 x_4, x_5, x_6$ = स्वतंत्र चर


Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-09, No.04, September: 2023

$b_1, b_2, b_3, b_4, b_5, b_6$ = प्रतिपगमन गुणांक

$a_{1.23}$ = स्थिरांक

$x_1$ = जनजातियों की आय

$x_2$ = जनजातियों का कार्य

$x_3$ = जनजातियों की शिक्षा

$x_4$ = जनजातियों की कार्य अवधि

$x_5$ = वनोपज की किस्म

$x_6$ = परिवार का आकार

$$Y = 21 + 0.18x_1 + 0.16x_2 + 0.27x_3 + 0.17x_4 + 0.26x_5 + 0.14x_6$$

$R^2 =_{0.82,}$ $R^2$=निर्धारण गुणांक

जनजातियों की आय पर उपर्युक्त 6 कारकों के प्रभाव का अध्ययन करने से स्पष्ट है कि शिक्षा एवं बचत सबसे महत्वपूर्ण कारक है जो आय को अधिक प्रभावित करते है एवं उपर्युक्त सभी कारक जनजातियों की आय को प्रभावित करने वाले कारकों का 82 प्रतिशत है शेष 18 प्रतिशत अन्य कारक हैं जो जनजातियों की आय को प्रभावित करते है।

## निष्कर्ष

जनजातियों की आय का बहुत बडा हिस्सा वनोपज से प्राप्त होता है। शासन को वनोपज की न्यूनतम समर्थन मूल्य घोषित करना चाहिए एवं वनोपज की विपणन की समुचित ब्यवस्था करना चाहिए। जिससे बिचौलियों से उनकी रक्षा की जा सके।

## संदर्भित ग्रंथ :–

1. Acharya, Rajib Lochan (2020), "Forest Resources and Growth of Tribal Economy:A Study in the District of Keonjhar", International Journal of Tribal in Scientific Research and Development, vol.-5, Issue-1, e-ISSN:2456-6470, Dec. 2020, pp. 482-486.
2. Ali, Irshad & Arindam, Basak (2018), "Socio-Economic Condition of Oraon Tribe in Garal Bari Gram Panchayat of Jalpaiguri District, West Bengal", International Journal of Research and Analytical Reviews, vol.- 5, Issue- 2, e-ISSN: 2348-1269, p-ISSN: 2349-5138, June 2018, pp.2137-2146.
3. Baskey, Sunil Kumar (2016), "A Study on the Socio-Economic Status of Tribal People in the District 0f Burdwan West Bengal", International Journal in Management and Social Science, vol.-4, Issue-9, ISSN:2321-1784, Sep. 2016, pp.
4. Deo Shankar & Patel,S (2014), "Study on Standardization of Starch Extraaction Time From Rhizomes of Tikhur", International Journal of Agricultural Engineering, vol.-7, Issue- 2, e-ISSN:0976-7223, Oct. 2014, pp. 436-441.
5. Gautam, Neera (2013), "Education of Scheduled Tribe in India: Scemes and Programmes", Journal of Education and Practice, vol.-4, no.-4, ISSN:2222-288X (Online), p-ISSN:2222-1735, 2013, PP. 7-10.
6. Gedela, Ravi & Naidu,Ravi (2016), "Madhuca Longifolia Flowersfor High Yields of Bio Ethanol Feedstock Production", International Journal of Applied Sciences Biotechnology, vol.-4, Issue-4, ISSN: 2091-2609, 2016, PP. 525-528.
7. Hossain,MD Emran & Sarma, Sabuj Manohar (2015) , " Nutritive Value of Sal Seed ( Shorea Robusta)", Online Journal of Animal and Feed Research, vol.-5, Issue-1, ISSN: 2228-7701, Jan. 2015, pp. 28-32.
8. Jaisawal, A (2019), "Tribes of India's Overall Demographic Scene and Demographic Features in Tribal Societies", Anthropology and Ethnology open Access Journal, vol.- 2, Issue- 2, ISSN: 2639-2119, 2019, PP. 1-13.


Copyright @ 2023 Author

9. Kaur, Amritpal (2017), "Use of Mango Seed Kernels for the Development of Antionidant Rich Biscuits", International Journal of Science and Research, vol.- 6, Issue- 8, ISSN: 2319-7064, PP. 535-538.
10. Khan, Irshad & Nayak, Jayanta Kumar (2018), "Socio-Economic and Demographic Profile of the Hill Korwas in Sarguja District, C.G. : An Anthropological Study", International Journal of Research in Social Sciences, vol.-8, Issue-6, ISSN: 2249-2496, June 2018, pp. 296-310.
11. Mathniyan, Ekta (2018), "Study of Education and Development of Baiga Tribe in District Manda", International Journal of Research in Geography, vol.- 4, Issue-1, ISSN: 2454-8685, 2018, PP.14-16.
12. Manna,Samita& Sarkar, Rimi (2013), " Education and Patterns of Marriage System : A Micro Study on the Birhors in Hazaribag District, Jharkhand", International Journal of Social Science, vol.-2, no-2, ISSN : 2321-5771, Dec. 2013, pp. 109- 118.
13. Marothia, DK & Gauraha, AK (1996), "Co-Operative Management of Tendu Leaves: A Micro Analysis", Indian Journal of Agricultural Economics, vol.-51, no.-4, Oct.-Dec.1996, pp.760-763.
14. Masooma, Munir (2017), "Nutritional Assessment of Basil Seed and Its Utilization in Development of Value Added Beverage", Pakistan Journal of Agricultural Research, vol.- 30, Issue-3, Sept.2017, pp.266-271.
15. Mohanty, Pratap Kishore & Garada, Rabindra (2017), "Tribal Land Rights and Kotgarh Wild Life Sanctuary in Odisha- Issues and Concerns", IOSR Journal of Humanities and Social Science, vol.- 22, Issue-7, e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845, July 2017, pp.25-31.
16. Nabarun, Purkayastha (2018), "Tribe in Making : A Study on Oraon Tribe in Barak Velley Region of Assam", Global Institute for research & Education, vol.-7, Issue- 1, ISSN : 2319-8834, Feb. 2018, pp. 7-12.
17. Nzikou, J.M. & Onguila, A Kimb (2010), "Extraction and Characterstics of Seed Kernel Oil From Mango", Research Journal of Environmenral and Earth Sciences, vol.-2, Issue- 1, ISSN: 2041-0492, 2010, pp.31-35.
18. Owfi, Reza E. (2018), "Ecological Study of Harra Forests in the Nayband Protected Area at Bushehr Province, Iran", Journal of Coastal Zone Management, vol.-21, Issue- 1, ISSN: 2473-3350, 2018, pp. 1-3.
19. Pinakin, Dave Jaydeep & Vikas Kumar (2018), "Mahua: A Boon for Pharmacy and Food Industry", Currnt Research in Nutrition and Food Science, vol.-6, Issue- 2, ISSN: 2347-467X, 2018, pp. 1-11.
20. Prasad, Sunil (2020), "Chironji (Buchanania Lanzan) : A Retreating Valuable Resource of Central India", International Journal of Bioresource Science, vol.- 7, Issue- 1, ISSN: 2347-9655, 2020, pp. 1-4.
21. Rajak, Jyoti (2016)," Nutritional and Socio-Economic Status of Sahariya Tribes in Madhyapradesh", International Journal of Humanities and Social Sciences, vol.-6, no.-1, ISSN: 2250-3226, 2016, pp.79-85.
22. Sahu, Purnima & Tiwari, Jyoti (2015), "Socio- Economic- Cultural Aspects of Tribal Housing in C.G.", Journal of International Academic Research for Multidisiplinary, vol.- 3, Issue- 1, ISSN: 2320-5083, Feb.2015, pp.422-435.
23. Sinha, Jyoti & Singh, Vinti (2017), "Phytochemistry, Ethnomedical uses and Future Prospects of Mahua as a Food: A Review", Journal of Nutrition & Food Sciences, vol.-7, Issue- 1, ISSN: 2155-9600, 2017, pp. 1-7.
24. Shukla, Niket & Pandey, Sanjay (2015), "A Study on Marketing of Forest Produce of Chhattisgarh State", International Journal of Engineering and Technology, vol.-2, Issue-8, e-ISSN:2395-0056, p-ISSN:2395-0072, Nov.2015, pp. 1665-1670.
25. Singh, Ranjan Kumar & Mandal Joydip (2018), "Study on Present Practices of Chironji Nut Processing in Chhotanagpur Plateau Region", International Journal of Current Microbiology and Applied Sciences, Issue- 7, ISSN: 2319-7706, 2018, pp. 4680- 4684.


Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-09, No.04, September: 2023

26. Suganath,R.S. & Jinu, R. (2020), "Debasement and Resurgence of Culture, Tradition and Nature : A Tribal Perspective of Rajam Krishnan's When the Kurinji Blooms", Journal of Critical Reviews, vol.-7, Issue-6, ISSN: 2394-5125, 2020, pp.1104-1106.
27. T.Brahmanandam & T. Bosu Babu (2016), "Educational Status Amang the Scheduled Tribes: Issues and Challenges", The NEHU Journal, vol.-14, no.-2, ISSN: 0972-8406,July-Dec. 2016, pp.69-85.
28. Tripathi, Prakash (2016), "Tribes and Forest: A Critical Appraisal of the Tribal Forest Right in India", Research Journal of Social Science & Management, vol.- 6, Issue-6, ISSN: 2251-1571, Oct. 2016, pp.1-7.
29. Tah, Jagatpati & Mukharjee, Ashok Kumar (2018), "Ecological Hindrances for Establishment of Mass Population of Sal in Forest Gardens Overtaing ", Asian Journal of Applied Science and Technology, vol.- 2, Issue- 2, April- June 2018, pp. 857-872.


Copyright @ 2023 Author